पाश्चात्य दर्शन के संदर्भ में ज्ञान

पिछले दिनों हमने 'ज्ञान देने' के संदर्भ में ज्ञान के मायने और ज्ञान के प्रकारों पर चर्चा करते हुए यह देखा कि ज्ञान किसी वस्तु की तरह नहीं है और इसीलिए ज्ञान को वस्तु की भांति दिया भी नहीं जा सकता। ज्ञान अर्जित करने के लिए हरेक व्यक्ति को अपने प्रयास करने होते हैं। साथ ही दूसरे लोग इसे अर्जित करने में मददगार जरूर हो सकते हैं। न्याय दर्शन मुख्य रूप से प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द को ज्ञान अर्जित करने के साधन के रूप में देखता है।

यहां हम पाश्चात्य दर्शन के संदर्भ में ज्ञान संबंधी सवालों पर थोड़ा–बहुत विचार करेंगे कि पश्चिमी दर्शन में ज्ञान के बारे में क्या सोचा गया है ? ज्ञान प्राप्ति के साधनों के बारे में क्या सोचा गया है और देखेंगे कि ज्ञान होने के लिए किन–किन शर्तों का होना जरूरी है।

इस दुनिया और इसके बारे में होने वाले ज्ञान के बारे में दुनिया की तमाम सभ्यताएं बहुत पहले से विचार करती रही हैं। समस्याएं लगभग वही थीं और हरेक सभ्यता में उन पर विचार हो रहा था। अतः इस दुनिया के बारे में अलग–अलग देशों और सभ्यताओं में हुए दार्शनिक चिन्तन को जानना एक दिलचस्प कहानी की तरह है।

हजारों साल पहले, जब विज्ञान आज की तरह अपने विकसित रूप में नहीं था, तब भी लोगों में इस दुनिया में होने वाली घटनाओं के बारे में जानने की दिलचस्पी थी। यह दिलचस्पी रोजमर्रा में होने वाली घटनाओं के बारे में भी थी। जैसे कि, दिन–रात कैसे होते हैं ? बारिश कैसे होती है? पेड़–पौधे कैसे उगते और खत्म हो जाते है, आदि–आदि। दूसरी तरफ, कुछ ऐसे सवाल भी थे जो इस दुनिया के बारे में समग्रता में जानने से जुड़े थे। जैसे कि, इस दुनिया की उत्पत्ति कैसे हुई ? क्या कुछ ऐसी सामान्य चीजें हैं जिनसे मिलकर यह दुनिया बनी है ? इस दुनिया को

किसने बनाया है; आदि–आदि। हम देख सकते हैं कि समय के साथ विज्ञान के हुए विकास के माध्यम से बहुत से सवालों का इंसान ने एक तरह का विश्वनीय ज्ञान अर्जित किया है।

आज के समय में यह जाना जा चुका है कि दिन–रात कैसे होते हैं अथवा बारिश कैसे होती है। इस दुनिया के बारे में बहुत से सवालों के बारे में विज्ञान हमें संतोषजनक जबाव दे चुका है। लेकिन फिर भी विज्ञान के दायरे से बाहर अभी बहुत से सवाल हैं जिन पर संभवतः समय के साथ कुछ प्रकाश पड़े। लेकिन कुछ सवाल इस दुनिया के बारे में होने वाले ज्ञान के बारे में भी थे। जैसे कि ज्ञान होता क्या है? हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानते कैसे हैं ? जानने के साधन क्या हैं और जिसे हम जान पाते हैं; वह सत्य है अथवा असत्य, इसे हम कैसे जान पाते हैं? इनके अलावा भी बहुत से सवाल हैं जिन पर दार्शनिक चिन्तन करते रहे हैं। ये सवाल इंसानों के आचरण से संबंधित थे।

जैसे कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए ? क्या करना उचित है और क्या करना अनुचित है; आदि–आदि ? जितने भी सवाल उपर उठाए गए हैं इनमें से बहुत से सवालों के बारे में जानने के लिए हम विज्ञान की तरफ जाते हैं और बहुत से सवाल अभी भी दर्शन के क्षेत्र में बने हुए हैं।